

संजिवनी
सुयंदर नगर,
खण्डेलवाल कालोनी
दुर्ग (छ. ग.)

श्रद्धांजली

पूज्य नाज (श्री जनक प्रसाद दुबे)

और

पूजनीया बाई (श्रीमती केजा बाई)

को

जिनके वात्सल्य की छाँव में अनेक
बचपनों में

सुसंस्कार अंकुरित हुए।

भूमिका

बच्चों के लिए छत्तीसगढ़ में कम लिखा जा रहा है। बाल-साहित्य में राष्ट्रव्यापी स्थापति अर्जित करने वाले तपस्वी साहित्यकार नारायण लाल परमार की कमी हमें निरंतर खल रही है। छत्तीसगढ़ी में तो बाल-साहित्य की नितांत आवश्यकता है। राजभाषा छत्तीसगढ़ी की जीव रखने में इसका अतुलनीय योगदान हो सकता है। मूलतः गीतकार श्री निशीथ पांडेय की 'घानी-मूँदी' इस दिशा में सार्थक प्रयास है।

'घानी-मूँदी' में बाल-रंग की विविधता है लेकिन मूल स्वर एक है-खेल-खेल में शिक्षा और जीवन-संदेश। पहली ही कविता में सवाल के बहाने बच्चे समूचे ब्रह्मांड की परिक्रमा कर लेते हैं। उनकी जिज्ञासा अनेक वैज्ञानिक सिद्धांतों की जानने की ललक प्रदर्शित करती है। चंदामामा बच्चों के प्रिय - पात्र हैं, इसके बहाने भी निशीथ रच लेते हैं - पतंग कस रुख में अरझै/कभु परदा, घघ के झंकि/तरितया में चौंकी घोरि/ कभु बादर के रथ हंकि। सहज-सुगम्य शब्दों के सहारे भी कवि ऐसा संसार रचता है, जो छत्तीसगढ़ी बाल-साहित्य की एक नई दिशा देता है। शब्दों का चयन आकर्षक और संवेषणीय है।

संग्रह की लगभग सभी कविताएँ छत्तीसगढ़ी बाल-मन की भीतर तक छूती हैं और उन्हें ज्ञान-विज्ञान के संसार में रमे रहने का मस्त वातावरण देती हैं। 'घानी-मूँदी' के सहारे गीतकार निशीथ ने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है, यह यात्रा निरंतर जारी रहे, यही शुभकामनाएँ हैं।

मंदकिशोर तिवारी

छत्तीसगढ़ी लोकाक्षर, बिलासपुर

देखे रहिबे

गीत	पृष्ठ क्रमांक
1. सवाल	9-10
2. चन्दा ममा	11-12
3. अलकरहा	13
4. जनउला	14
5. रेलगाड़ी	15-16
6. कहिनी	17-19
7. दाई-ददा	20
8. अंगरेजी	21-22
9. पढ़े चल	23-24
10. हंगामा	25-26
11. निन्नी चलिअ बजार	27-28
12. खजानी	29-30
13. टपकनही	31-32
14. घड़ी	33-34
15. चंदा	35-36
16. सिखउला	37-38
17. खिरखी ले	39
18. भरोसा	40
19. नैदियानी	41
20. इन्द्रधनुस	42
21. मेला	43
22. बने कर	44
23. ये काँकर	45
24. रुख	46
25. नानकुन	47

1. सवाल

नानकुन भले मैय हावैव,
भौर सवाल तव हे बड़े !
चाहे कहूँ कती जावैव,
बात इही मन में उमड़े !

कौन उहर किजराय भला
सुरूज रातौ बिकाल के ?
बैर बुझत कौन छवइया
तरई भरे तिरपाल के ?
कइसे होथै कभु टुटहा
चंदा कभु सइघौ-सइघौ ?
घघ के पहाड़ में अकास
अमरा जाथै का सिरतौ ?
मैंइदा अकास के भारी
कौजनि खंभा कती नड़े !

कहाँ ठिकाना बादर के ?
बिजली काबर लउके हे ?
छू लेथै बिन दिन्से हवा
कइसे जडुहा ठउके हे ?
काबर तरिया में पानी
थिर, नैदिया में धरे धार ?
जानैव नहीं समुन्दर के

पेट में कइसन भंडार ?
 कौन खनिस होहय मइछा
 अउ कौन हे पानी भरे ?

बीजा बी माटी में तव
 काबर जामय रुख-राई ?
 काबर रुख में फरय नहीं
 गोट-खेलउना-मिठाई ?
 जंगल में जामिस कइसै
 रुख अतका भारी-भारी ?
 कौन इहाँ डारय पानी ?
 कौन करत हे रखवारी ?
 फूल-पान ला कौन रँगय ?
 काय इहाँ तितली टमड़े ?



2. चंदाममा

चंदाममा आकास में
 ले के अतैकन तरई
 आधस तव निक लागय !
 लुकाधस तव भारी करलई !

कशु रौटी मौल-मौल कशु
 बतासा के भाई सहीं !
 कशु तँय खीर के कटौरा
 अउ गुरतुर मिठाई सहीं !

तोला कशु तौपय-ढोंकय
 धीरकी हलवाई नहीं;
 रात अंधियारी खा दय
 तभे चुपे बिलाई सहीं ।

कशु पैचके प्याला सहीं !
 कशु धार धरे हैंसिया के !
 रुपिया ठगक्का बगधस कशु
 टाठी तकौ पसिया के ।

देखै करय भले कौनो
 तोला कतकौ मुसिया के

मर जायें सबे रिस तौर
चँदनी में फँसिया के ।

पतंग कस रुख में अरझै
कशु परदा घघ के झोंके !
तरिया में चाँदी घौरे
कशु बादर के रथ होंके ।

वो हिरदय जुड़ावय नहीं
कहूँ जउन ला तँय ओँके ।
अनदेखनहई मर के मरहन
घलव तौला ठोंके ।



3. अलकरहा

छाता बिन बैंगचा रहय
चौरोबोरो पानी में !
मुड़ कुघर लिस बैदरा जब
झम ले कूदिस छाणी में ।

बुड़े-बुड़े पानी में जब
सरदी धर लिस मछरी ला,
छींक के वो झमाझम हवा
में उड़ा दिस छपरी ला ।
खोजत फिरत बघवा घरी-
घर खुरमी के गठरी ला ।

कोकड़ा में डोर बाँध
चाँटी पतंग उड़ावय रे !
कुकुरा कहय मोर बासे
बिन बिहान नह आवय रे !
चघ के निसइनी जौमनी
चंदा ला बिजारावय रे !

दाँत में धिरई के अरझा
गय छीकता कुसियार के !
घुसका ले के भागिस मुसुवा
कुकुर ला भुलवार के !
तितली ला बिहाय चलिस
टेटका रूप सँवार के !

4. जनउला

गोल-गोलिया-गोलझुंदा गोला !

ढलगत दुलदुली दुलत ढीलढीला !

झूलव मगन अक्कल के हिन्डीला
जनवात हँव मैय जान लव जनउला !

फोकला सड़बुसरा गूदा उज्जर,
सटक मय दू कटोरा तरी-ऊप्पर !
धरे रहय मिठ-मिठ कभु पानी घलव !
न तो लीटा ए, न करु ए, न हँउला !

हवा के दानी मरय बिना पानी !
जीव हे तभी ले गीहय परानी !
साय-पहिरे, गुजर-बसर में हितवा
ए ला कहाँ धरय कभु झौझ-झौला !

एखर बिन नहीं जिये सकय किसान !
संपत्ति मैवई के इही भगवान !
मेहनत अउ जौंगर के धनी अबड़,
एखरेव सवारी करथे भीला !

अंजौर के फर अंधियारी नार !
सुरूज ला देखतै परत बीमार !
संग-संग किजारय देस-परदेस !
रूप बदलय बदले नइ कभु चीला !

5. रेलगाड़ी

रेलगाड़ी ! रेलगाड़ी !!

सीडई नइ ये खटर-पटर !

समझव तव बौली एखर !

टिकिट कटा ! चघ बिना फिकर !

टैसन में अपन झट उतर !

डब्बा इंजिन के पिछाड़ी !

रेलगाड़ी ! रेलगाड़ी !!

जाड़ कटाकट परत रहय

या भूँजय मरमी-झौला;

पानी मिरय चाहे बिजली

लउकय झझक नहीं वो ला !

गाँवा बिन डीहारथे

चहुँदेस मनखे संग समान,

देह में सरलंग जइसे

लहू दउझत हे गाड़ी !

खेत-बस्ती-तरिया-मंदिर,

खम्भा बिजली-फीन के

लागथे जइसे डेरा के

भागत हे सिरतोन के !

कूदय नरवा-मैंदिया ला
मार-मार के छलौंम !
रेलगाड़ी ला छेके नइ
सकत हे जंगल-झाड़ी !

कतकी हे बलवान तभो
ले नैम ला निभावत हे !
दउड़य हरियर बत्ती में
तव लाल में थिरावत हे ।

दउड़ई धरम रेलगाड़ी
के थकासी मेर बैर !
लचकय एखर मीड़ थीरकी
न पिरावय कभु माड़ी !



6. कहिनी

बात नीत के हार-जीत के
सुनव तव ए मैं सियानी हे !
ये कहिनी बहिनी अक्कल के
न राजा ए मैं न रानी हे ।

रुख में घर बेदरा के रहय
पानी में मंगरा के धाम ।
वो बेदरा अपन संगी मंगरा
ला रोज खवावय जाम ।
जाम ला खा के मंगरा के
बाई कहिस अबड़ मिठ हे गौ !
अइसन मिठ खवइया बेदरा
के करेजा ला खातैन ही ।

बेदरा मंगरा संग चल दिस
नेवता में अउड़ाई के ।
मंगरा बेदरा ला मंसा
बता पारिस अपन बाई के ।
बेदरा चतुरा कहि दिस मीर
करेजा रुख में टँगाय हे ।
चल लहुट झट तभे तव लेगबो
अउजी बपुरी मेंगाय हे ।

पार में आ के बेंदरा रुख
 घघ के कउनवन टारिस अलहन ।
 कपटी मैंगर ला मरियावत
 कहिस पाप तौर मितानी है ।

अपन दउड़े के घमंड में
 खरगोस कछुआ ला दलकारिस !
 अरे धीरन्त ! तैंय कौढ़िया !
 दउड़ में भौर संग सब हारिस !
 कछुआ मंसा बाँध के खरगोस
 के घमंड ला कीड़े के
 संगी-गता के बरजे में
 कहिस दाँव नहीं ये छोड़े के ।

दउड़ होइस तहाँ रेमिस कछुआ
 दउड़ते-दउड़िस खरगोस ।
 सुस्ताय लामिस सौच के
 कछुआ पछुआय है केउ कीस ।
 एती खरगोस सुत भुलाइस
 तव कछुआ अघुवा गय औती ।
 घमंड के मुड़ नैव गय घमकिस
 धीरज अउ जौंगर के मौती ।

खरगोस के हार भरोसा
 के बार दिस दिया तिहार सहीं ।
 घमंड में गुन मइलाय बुध
 अइलाय मानत सब म्यानी है ।

पिंजरा में धंधाय बघवा
 कहे लामिस बुद्धुराम ला
 झट के बचा भइया जीव ला
 भौर छोड़ अपन सब काम ला ।
 बुद्धू तुरते पिंजरा ला
 खोलिस बघवा ला छोड़ाय बर ।
 फेर वी दुस्ट बघवा तियार
 होमय बुद्धूय ला साथ बर ।

औतकेच में आ गय वी भैर
 बुद्धू के संगी हुसियार ।
 एक कती गुरावत बघवा
 एक कती दुखी के मोहार ।
 हुसियार कहिस बघवा अतका
 बड़ पिंजरा में नहीं अभाय ।
 देखे बिन मैंय तव मैंय दुनियाँ
 भर में कीनो नहीं पतियाय ।

बघवा पिंजरा में खुसरिस
 तुरते वी ला धाधिस हुसियार ।
 कहिस अरे जंगल के राजा
 इही ठउका राजधानी है ।

7. दाई-ददा

दाई-ददा ले बड़े
नहीं भगवान कीनो !
ईसर बिन नइ पावैय न
देह न परान कीनो !

दे वर अपन मया के
घर-घर में चिन्हारी,
परमात्मा बनाय हे
बाप संग महतारी ।
ईसर मया ले उद्धार
नइ हे बिहान कीनो !

मों-बाप के धीरकी
जीव कमुच इन कलपय !
हमर करनी में ईसर
औंसू तक इन छलकय !
ये सुखी नहीं तव नइ
फलथ बरदान कीनो !

ईसरे असीस में तव
बिपत जम्मे टरे हे !
ईसर उमर लइका के
भलाई में इरे हे !
ईसर करजा छूट नइ
सकय संतान कीनो !

8. अंगरेजी

जान ले अंगरेजी बन जा
लेडी या जेन्टलमैन !
मिलही मिलही नइ मिलही
अइसनहा मौका अगेन !
औ पी क्यू आर एस टी यू
वही डब्ल्यू एक्स वाय जेड
ए बी सी डी ई एफ जी एच
आई जे के एल एम एन !

मारा-मारी माचे हे
तव जान उही ए फाइट !
दोस हीवय तव रॉय कहिबे
बने-बने ला राइट !
बिहान मार्निंग ! साँझ इवनिंग !
रात ला कह नाइट !
डार्क कहैय अंधियार ला
अंजोर कहाथे लाइट ।
कर सकस कीनो काम
तव कहि दे आई केन !

मुरूस ला फूल कहिथें अउ
फूल ला कहिथें पलावर !
क्लाउड कहिथें बादर ला
हलकानी ही मय बादर ।

राउण्ड नील ए नील अंताज !

ब्रिज पुल ! पुल झींक !

रोप डोर ! डोर दुआरी !

अब नाउ ! नाऊ बारबर !

हो जाथै तव डन कहिबे !

इन बोलबे कर डरिन !

ले जौहार हाउ इ यू इ !

धरन है तौर धैक्यू !

मैनी कतकी, अति दू मच,

लैस कमती, धीरकिन पथू !

भेद ए कलू ! नील ए बल्यू !

पगुराई ला कहिथैं घ्यू !

दिसवथै तउने तव व्यू ए,

नवा-नैवरिया सबै न्यू !

बने-बने सब रहे रहिही

करत रहे कर मैन्टेन !



9. पढ़े चल !

चल पढ़े बर चल !

सिक्छा भारी बल !

तमै कर सकबै

ये जिनगी सफल !

छोड़ इन पढ़ई !

इहीं में बड़ई !

जीतना है अब

कलम के लड़ई !

चल पढ़े बर चल !

ले गुन-जस सखल !

सिक्छा अंजौर !

बढ़ती के सीर !

टारय बिपत ला

जिनगी के तौर !

चल पढ़े बर चल !

कुहिरा ले निकल !

बिदया के रंग !
 कमाय के ढंग !
 बुध बाढ़ जाथै !
 खुसी धरय संग !
 चल पढ़े बर चल !
 किस्मत ला बदल !



10. हंगामा

हंगामा ! हंगामा ! हंगामा !
 हंगामा ! हंगामा ! हंगामा !
 जइसे नानैकुन पडजी घुठुवा
 तक लम के बन जावय पैजामा !
 सीडझे-सीझ के गोठ कीनी अब
 लम जाथै तव माचय हंगामा ।

एक हाथ के खीरा ले निकलय
 सइधौ बीजा तक सवा हाथ के !
 संझा के बीये बीजा तक ले
 रुख जाम जाथै कउखन रात के !
 लीम के डारा में फरे हावय
 लटलट ले याहा बड़-बड़ आमा !

छाव नहीं है बादर अभी तभी
 भर गय पानी चभरंग-चभरंग !
 सुक्खा कुओं में कूदाकूद है
 खिलत मछरी झझरंग-झझरंग !
 भंगभंग ले बारय बिग आमी !
 इहाँ एके रावत अउ सुदामा !

11. निव्नी चलिस बाजार

गीट कड़कड़हा ठगका
रुपिया, अठवनी, चरवनी
धर के निकलिस जाय बर
अब बाजार एक दिन निव्नी !
घर लै निकलिस जाय बर
अब बाजार एक दिन निव्नी !

रस्ता में बिजली खंभा

कहिस निव्नी सुन तव बात !

देह-हाथ बिकट पिराथै

खड़े-खड़े मोर दिन-रात !

अड़वै-अड़वै ! निव्नी कहिस

करिहँव तौर सबै काम !

बड़ठे बर खुरसी, सारे

बर लगिहँव झण्डू बाम ।

अब फेर कभु नहीं धरही

हाथ-गोड़ तौर झुनझुनी ।

गल मिलिस कहिस के सब के

प्यास मेंहीं बुताथँव वो !

काय लगवै मोरौ बर ?

मेंय खुदे गरमियाथँव वो !

निव्नी कहिस छाँव में रहे

कर गल गड़ समझ तौला !

जुड़ हवा बर कूलर लाहँव !

पिये बर पैप्सी कौला !

रोज मेंगवा लेबे जूस

अर के प्लास्टिक के पवनी !

भैटिस सूँरा ला निव्नी

कहिस अति बन्सात हस तँय !

बिन बिलौर झट के कहि दे

काय मेंगवात हस तँय !

सूँरा कहिस रिन सुप्रीम,

सेण्ट, सीसी अर डेटोल,

पोण्ड्स ड्रीम पलावर टैल्क

अउ नाक पोछे बर कमाल ।

छाग के पीहँव पानी

लगवै एक ठग छवनी ।

12. खजानी

हम घना-मुरा-लाई !
 एक बहिनी दू भाई !
 हम ला मुँह में भरे में
 तुरते माढ़य लड़ाई ।

लड़का या सियान होय !
 बुढ़वा अउ जवान होय !
 बैरी या मितान होय !
 कमियां अउ किसान होय !
 सबे मन भर के खावैय
 तइसन हमन हन खाई ।

ठठरम के ठट्ठा घना !
 घुरघुर चलन के मुरा !
 कुर्रुम लाई भूख के
 सबी छीड़ाथन घुरा ।
 अपनेव मुँह में कतैक
 करन अब अपन बड़ाई ।

भाड़ में हमन फूटेन !
 डुरु-डुरु कीनी छूटेन !
 पैट सब्बे भर-भर के
 अब्बड़ जस तक लूटेन !
 दूसर के काम परथी
 तउने करथी भलाई !



13. टपकनही

अररर ! बुँदिया पानी के
 इन इनर इनर-इनर झिमिर-झिमिर !
 बिन बलाय आय हव काबर
 हो मय बुता सब छिदिर-बिदिर !

सौडई घर भीतर धौंध के !
 अस्तकट के डोरी बाँध के !
 खुद भेछरावत नइ लजाव
 मोर हरहिछई छाँद के !
 रदनदउहन करत उपदनव
 घोरियावत हव सिटिर-पिटिर !

कहाँ बनावैव घरबुँदिया ?
 कते मेर खेलैव माथैल ?
 घानी-मूँदी कती करिहैव ?
 मोर नैदा मय सब्बे खेल !
 मौला नइ आवय थीरकी
 तँहर ये बोली टिपिर-टिपिर !

नौंदिया-तरिया में खेलव !
 जावव खेल ला हरियावव !
 फूट-फूट के काँछ अस ये
 अंगना में इन छरियावव !
 कौनजनि काय पाथव तुमन
 चिखला मता के किविर-किविर !



14. घड़ी

टिक-टिक-टिक-टिक
मावय घड़ी मीत !
बिल थिराय रेंगई
एखर रीत !

बारा लै जादा
गले गइ आय,
तभी लै दुनिया
ला समय बताय !
देरी होमय तब,
भारी अनीत !

कौंटा एखर
अइसना बलवान !
समय के कुटा
करथै नान-नान !
एखरै फैसला
में हार-जीत !

कमु भीथिया कमु
कोनो पठेरा,
गइ तब हाथै
में करय डेरा
जाब-जाब बनथै
ये काखरौ मीत !



15. चंदा

जमाजम घर-दुआरी !
तरई के फुलवारी !
औंसी भुलावय नहीं
चंदा के धिठहारी !

चंदा के डेरा बर
इहाँ सीझ रस्ता है !
मन के घोड़ा में बइठ
सवारी सस्ता है !
सऊँव के मठरी धर ले !
साध के पैटारी !

लैवना के भीथिया,
मलाई के फइरका !
चंदा के बस्ती में
खेलय-कूदय लइका !
गइ है टोकइया नहीं
कान्खरौ रखवारी !

चंदा के घर में कुछु
बुता नहीं अराम है !

सपना के छाँव संज
ठलहई के घाम है !
राम में अंजोर के
मवइया अंधियारी !



16. सिखउला

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए

ए ऐ औ औं अं अः ।

सीख खेलवारी में

गीत सुना ! किस्सा कह !

एक राजा के रानी अउ दू राजकुमार,
तीन खैंड़ के औखर महल में दुआरी चार ।
पाँच एकड़ में बगइचा ! छे किसम के पैड़ !
सात रंग के फूल आठ पहर के सिंवार !
राजा के खजाना में लौ रतन के कूड़ा,
रात-दिन पहरा देखैय दस-दस चौकीदार ।

इतरो इन इतवार कहय सम्भार सुमत जग ।
मंगलवार कहय इन मौल मेहनत में पा ।
बुद्धि में बल कस बुधवार-ब्रिहस्पत जोड़ी !
सुकवार के सौर सुख दे के संतोस बढ़ा !
सिरतो कस संगी नहीं सगीच्यर समझावय !
अपन-अपन समहर के सुधधर संसार बना !

कुकुरा बासय कुकुरस दूँ ! कैउआ काँव-काँव !
जिनगी के रस्ता में दुख-सुख के घाम-छाँव ।
कुकुर के भों-भों, म्याऊँ-म्याऊँ बिलाई के !
धरम बने मथा के ! पुठन करम भलाई के !
छेरी बोलय में-में ! गरुआ करथे बाँ-बाँ !
महतारी के कौरा कस हे सुख भला कहौं ?



17. खिरखी ले

अकबकारी टरही सुन सुद्ध
हवा के कहानी खिरखी ले !
घर-बाहिर के नता बर नहीं
बढ़िया मीतानी खिरखी ले !

फुलवारी बलाय खिरखी ले !
अकास गौठियाय खिरखी ले !
हैलमेल जौहारय दिन भर !
गरा कियकिचाय खिरखी ले !

सुसनय बिलई ये खिरखी ले !
घहकय चिरई ये खिरखी ले !
घाम झरय अउ सौँझ सम्हरय !
घमकय तरई ये खिरखी ले !

जाममम देवारी खिरखी ले !
रैमय पिचकारी खिरखी ले !
दिन-बादर कैरत आरो अउ
सब सौर तिहारी खिरखी ले !



18. भरोसा

एक दिन जीतबै अवस कर के !
राखबै भरोसा जतन भर के !

सदा के नौहय ये अंधियार !
बरा हिम्मत के दिया अभी बार !
नास हो जाहय जग्मो डर के ।

कौंटा मिलय चाहे फुलवारी !
रहय के झन रहय संववारी !
अधुवाय रहेबै धीरज धर के !

संसी के कुहिरा भले छावय,
मेहनत झन कभु खँगे पावय;
तब चिखबै नस सांति के फर के ।



19. नँदियानी

डममम-डममम डोलत मोर
 डोंगी चलिस धरि-धार ।
 संभै-संभ मैंहूँ किंजरैव
 कभु ये पार ! कभु वी पार ।

इलहाबाद, बनारस आर्य
 मंगा गहकत हरिद्वार ।
 गोकुल-मथुरा मैं जमुना
 राधैस्याम करत गौहार ।

अमरकंटक, झिड़ाघाट के
 गरबदा करत सिंगार ।
 धमतरी, राजिम, संबलपुर
 मैं महानदी के दुलार ।

नासिक लै राजामुंदरी
 के गौदावरी रखवार ।
 घुरे है सिंधु के पानी मैं
 भारत के जय-जयकार ।

कन्नड़-तेलुगु मैं कृष्णा
 मद्रास है मया के तार ।
 कर्नाटक मइके कावेरी
 के तमिलनाडु ससुरार ।



20. इन्द्रधनुस

बगरात रिगी-चिंजी हौंसी मुस-मुस
 उमय लजकुरहा इन्द्रधनुस ! इन्द्रधनुस !

बादर चलाइस पानी के फौहारा
 फाट के घाम के होमय सात फारा ।
 कुलकत है भुँइयों अकास घलव है खुसा

सुकुज के रथ संग घीड़ा सतरंगी
 कहत हैं चलय नहीं जिनगी एकंगी ।
 एकी रंग बिना सबबो मजा है फुस ।

सात सुर जुर-मिल के संगीत सजायें,
 मेल फूल के सुंदर माला बनायें,
 सुनता मैं साज के दैय सुघरई परस ।

आन-आन बौली, रिवाज अउ भैस मैं
 घलव काढ़े है इन्द्रधनुस देस मैं ।
 घोरत मया-पीरा गुरतुर अउ लुसलुस ।



21. मेला

भीड़-भड़क्का संम मेला में
मजा अस के काय बतावै !
एक घाँव इहाँ आ गँय तहाँ
ले लहट के घर नहीं जावै !

मन ला असझावय रहिचुल
कभु सरम चघावय झूला हवाई ।

भावय मौला घानी-मूँदी
कस कठघोड़ा के किंजरई ।
हो के हरु सैमर कस बीजा
जेती नहीं तैती उड़ावै ।

जादू-तमासा, बेदरा गावा,
डंगघघहा, साँप के खेल ।
ढीलक, नौंगारा, बीन, बैसरी
अउ डमरु के होवत है मेल !
देवरनिन के गावा तक आय
है अब कतैक ला मनावै !

इहाँ बेचावत सेव, भजिया,
गरम जलेबी, समोसा, बरा ।
फिलफिली, पौमरी, फु म्मा अउ
पुतरी, खेलउना इही करा ।
काला खावै ! काय बचावै !
काला लैव ? काय झन बिसावै ?



22. बने कर !

जलघरा बगय करय बने कर !
बिगाड़े के बुता झने कर !

जिहाँ पाये तउनेच मेर
भलाई के कुआँ खने कर ।

जतके ही सकय ततके कर ।
कर अउ कर के झन मने कर ।

जेखर बर पुरस तेखर बर
जइसे होवय तइसनै कर ।

जिनगी के एक-अक छिन ला
बने कर कर के जतने कर ।



23. ये काँकेर

भन कहय के आ के इहाँ
जातेंव कहूँव इन फैर !
ये काँकेर ! ये काँकेर !!
धौ दय रिस के दाव सबे
लय संसी के फाँस हेर ।
ये काँकेर ! ये काँकेर !!

सीतला-सिंहाहिनी के
असीस के रीलौ के सुर ।
आंवा-कंकालिन के हे
परसादे मड़ई गुरतुर ।
रौंमे हे पूजा-पाठ में
संझा-बिहनिया दुनु बेर ।

अमली-मउहा औरियात
हरियाली औंखी सेंकय ।
हटकुल-महानदी-घिनार
डोंगर संव डहर छेंकय ।
भलुआ जंगल के राजा
इहाँ राज करय नइ सैर ।

भया के महमहई इहाँ !
बौली के सुघरई इहाँ !
रीत सबवे तिहार सबी
सुठता के सहिनई इहाँ !
मढ़िया पहाड़ के दरपन
दूध नदी बनिस ये मेर ।

24. रुख

रुख हे तव जिनगी हे रुखे ले कल्याण !
रुख के जतन बिन मनखे के मरे बिहान !

ये लय असुछ हवा सुछ हवा बगराय
अउ भुँइयों भीतरी के पानी उपराय ।
रुख के सेती बादर भुँइयों के मितान ।

बरसाती रेला में सीउड़ी बोहाथी
तउन माटी रुख के जरई में देंधाथी ।
इन रहव अब रुख के महिमा ले अगजान ।

कतकी परानी के हे रुख में बसेरा ।
रुख बिन जंगल नइ जंगलिहा के डेरा ।
खाय-पहिरे अउ गुजर के रुख दय समान ।

